

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

वैदिक साहित्य और पर्यावरण संरक्षण

डॉ. रीटा एच. पारेख *

आज समस्त मानव जाति का यदि किसी बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित है तो वह 'पर्यावरण'। जिस पर्यावरण ने आरम्भ से ही प्राणियों को उत्पन्न किया, पोषित किया है, उसी पर्यावरण को बुद्धिजीवी मानव ने अपने तुच्छ भौतिक स्वार्थ के लिए तथा अनुचित कार्यों से इतनी तीव्रता से प्रदूषित किया है कि अब प्राणीमात्र के लिए जीवित रहने का महान संकट उपस्थित हो गया है। आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण की वर्तमान एवं भविष्य की समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास कर रहा है।

सनातन विचारधारा के प्रवर्तक हमारे पूर्वज ऋषिमुनि अद्वितीय वैज्ञानिक, शोधकर्ता, मानव-कल्याण के प्रति समर्पित, दूरदृष्टि तथा गहरी सोच रखनेवाले पथप्रदर्शक थे। वे अपने स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञात कर चुके थे कि प्रकृति द्वारा स्थापित विधान के अन्तर्गत कुछ भी निरर्थक नहीं है। सूर्य, हवा, जल, मिट्टी, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि सभी एक-दूसरे के हितमें सदा सहयोगी बने रहते हैं। ये मानवों के हितैषी हैं, अतः उन्हें इन पर्यावरणीय पदार्थों का यथोचित उपयोग करना चाहिए और सदा ही इनका संरक्षण करना चाहिए।

ऋषियों ने मानव-मस्तिष्क को सही दिशा प्रदान करने के लिये वेद, पुराण, उपनिषद् आदि उत्कृष्ट ग्रंथों की उद्भावना की, ताकि मानवसमुदाय सामाजिक सद्भावना बनाये रखे और प्रकृति में अंगीभूत 'जीयो और जीने दो' के विधान का पालन करते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकास करते हुए आत्मोद्धार करे।

यजुर्वेद¹ का शान्ति मन्त्र इस सद्भाव को बनाये रखने का प्रेरणा-स्रोत है। जिसमें धूलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, वनस्पति आदि में सर्वत्र परम शान्ति बने रहने का उदात्त भाव अनुस्यूत है, क्योंकि शान्ति में ही परम आनन्द है।

हमारे पूर्वज बड़े ही दूरदर्शी थे उन्होंने अपनी प्रतिभा से यह देखा कि वनस्पतियाँ तो पृथ्वी का फेफड़ा हैं क्योंकि वे सभी जीवन स्वरूपों के लिये स्वच्छ हवा, भोजन, जल एवं आवास का प्रबन्ध करता है, इसलिये इनका संरक्षण होना आवश्यक है।

*डॉ. रीटा एच. पारेख आर्ट्स कोलेज, पाटण

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

हमारे पूर्वजों ने पारिस्थितिकीय विश्लेषण की पराकाष्ठा प्राप्त कर पर्यावरण-संरक्षण के लिये अनेक सरल तथा सामाजिक आचरण के लिये हितकर नियम प्रतिपादित किये थे। इसका उद्देश्य था कि समाज का प्रत्येक सदस्य अपने नित्य कर्म के सम्पादन में इस महत्वपूर्ण संरक्षण क्रिया में जाने-अनजाने अपना योगदान करता है। फिर उन दूरदर्शी महर्षियों ने इस व्यवहारिकता का भी अवबोध कराया कि समाज में सभी लोगों को इसकी जानकारी नहीं भी हो सकती है, अतः इन नियमों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये उन्होंने मानव-मनोविज्ञान के विश्लेषण के आधार पर सभी नियमों को व्यावहारिक बनाते हुए स्वर्ग नरक, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म तथा पाप-पुण्य की संज्ञा प्रदान कर सन्मार्ग में प्रेरित करने के लिये अनेक नियम बना दिये। उदाहरण के लिये -

वेद-पुराणादि शास्त्रों ने पीपल, वट, तुलसी आदि कई पेड़-पौधों को पूजनीय बताया और उनके काटने का निषेध किया है। वट, पीपल आदि देववृक्ष हैं। वटवृक्ष के मूल में भगवान् ब्रह्मा, मध्य में जनार्दन-विष्णु तथा अग्रभाग में देवाधिदेव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। देवी सावित्री भी वटवृक्ष में स्थित रहती है।

वटमूले स्थितो ब्रह्मा वटमध्ये जनार्दनः

वटाग्रे तु शिवो देवः सावित्री वटसंश्रिता ॥

ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्याको वटसावित्रीव्रत में वट का विशेष पूजन होता है। इससे सौभाग्यकी वृद्धि होती है। ऐसे ही पीपल में भी देवताओं का वास है।

- वृक्षों को साक्षात् ब्रह्म मानते हुए कहा गया है कि १० कुँओं के बराबर एक बावड़ी, १० बावड़ियों के बराबर एक तालाब, १० तालाबों के बराबर एक पुत्र एवं १० पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है।
- विष्णु धर्मसूत्र में कहा गया है कि जीवन में लगाये गये वृक्ष अगले जन्म में संतान के रूप में प्राप्त होते हैं।^२
- जो व्यक्ति पीपल अथवा नीम अथवा बरगद का एक, चिंचिडी (इमली)- के दस, कपित्थ अथवा बिल्व अथवा आँवले ले तीन और आम के पाँच पेड़ लगाता है, वह कभी नरक में नहीं जाता।^३

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

- वृक्षों को काटना अपराध है और इसके लिये दण्ड एवं प्रायश्चित का प्रावधान शास्त्रों में बताया गया है। व्यर्थ में वृक्ष काटनेवाला मनुष्य असिपत्र (एक नरक जहाँ के वृक्षों में तलवार के समान पत्ते होते हैं)-में स्थान प्राप्त करता है।
- प्राचीन भारतीय चिकित्सा-पद्धति के अनुसार पृथ्वी में ऐसी कोई भी वनस्पति नहीं है जो औषध न हो।
- जल को देवता स्वरूप मानते हुए सभी नदियों को 'जीवनदायिनी' कहा गया है।
- अथर्ववेद में कहा गया है कि जल एक विश्व भेषज (दवा) है।^४
- यज्ञवल्क्यस्मृति अनुसार नदियों, तालाबों आदि में मल-मूत्र, थूक अथवा अन्य दूषित पदार्थ का विसर्जन अशुभ कार्य है।

बाबड़ी, पोखर, तालाब आदि से पाँच मुट्ठी मिट्टी बाहर निकाले बिना उस में स्नान करना शुभ नहीं होता।

धर्मशास्त्रों तथा पुराणों में इष्टापूर्तधर्म की बड़ी महिमा है। इष्ट कहते हैं यज्ञ-यागादि के सम्पादन को और पूर्त कहते हैं निःस्वार्थभाव से कुओं बावड़ी, तालाब, देवालय, धर्मशाला, मंदिर आदि बनवाना, उनका जीर्णोद्धार कराना, छायादार एवं फलदार वृक्ष लगाना आदि। यमस्मृति में बताया गया है कि इष्टकर्मों से स्वर्ग तथा पूर्तकर्मों से मोक्ष प्राप्त होता है।

मत्स्यपुराण तथा पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड में वृक्षारोपण की विधि बताकर वृक्षारोपण -उत्सव मनाने का फल बताते हुए कहा गया है कि उस व्यक्ति की सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं और वह अक्षय फल का भागी होता है।

भविष्यपुराण में बताया गया है कि जो व्यक्ति छाया, फूल देनेवाले वृक्षों का रोपण करता है या मार्ग में तथा देवालय में वृक्षों को लगाता है वह अपने पितरों का उद्धार कर देता है और स्वयं भी शुभ परिणाम को प्राप्त होता है। जिसको पुत्र नहीं, उसके लिए वृक्ष ही पुत्र है। अश्वत्थवृक्ष लगाने से सन्तान लाभ होता है, अशोक वृक्ष लगाने से शोक नहीं होता, प्लक्ष उत्तम ज्ञान प्रदान करता है, बिल्ववृक्ष दीर्घायुष्य प्रदान करता है। वटवृक्ष मोक्षप्रद, आम्रवृक्ष अभीष्ट कामना प्रद तथा कदम्बवृक्ष का रोपण करने से विपुल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इस प्रकार शास्त्रों में वृक्षारोपण से लौकिक-पार लौकिक फल की प्राप्ति बतायी गयी है।

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

गायों के चरने आदि के लिये शास्त्रों ने गोचर भूमि छोड़ने की जो बात बतायी है वह बहुत ही वैज्ञानिक तथ्य है उसका लाभ कुछ समय पहले तक प्रत्यक्ष ही दृष्टिगोचर होता रहा है। आज यह परम्परा प्रायः लुप्त सी होती जा रही है, जिस से गोधन की बहुत हानि हो रही है।

भारतीय गोवंश को 'गोमाता' के रूप में प्रतिष्ठित कर उसे 'अधन्या' (न मरनेवाला जीव) – जैसी संज्ञा प्रदान की गयी है।

इस प्रकार इन नियमों के निर्धारण का आधार शुद्ध सक्रिय विज्ञान रहा है। इसलिये इनकी सार्थकता वर्तमान में भी स्पष्ट दिखायी देती है।

पीपलवृक्ष को भगवान विष्णु और वटवृक्ष को भगवान शंकर का स्वरूप प्रदान करने पर इन वृक्षों की स्थायी संरक्षण की व्यवस्था कितनी सफल सिद्ध हुई है इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आज भी भारतीय जनमानस में अधर्म के भय से इन वृक्षों को न काटने की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।

इसके पीछे वैज्ञानिक वास्तविकता यह है कि ये वृक्ष दीर्घायु, बड़े, छतरीधारी, औषधीय तथा प्रदूषण – नियन्त्रण के गुणों से भरपूर होने के साथ-साथ भारतीय पर्यावरण-परिवेश में सदियों से स्थापित सब से उपयुक्तवृक्ष है चाहे वह मृदानिर्माण, संरक्षण, जैविक उर्वरता-वृद्धि का कार्य हो या सभी जीवनरूपों के लिये वायुमण्डल में सही वायुमिश्रण-वृद्धि के साथ उसे स्वच्छता प्रदान करते रहने का कार्य हो अथवा भूजल भण्डारण में वृद्धिसहायक की भूमिका क्यों न हो। पीपल का वृक्ष तुलसी के समान २४ घंटे आक्सीजन का प्रसारण करता है। एक अनुमान के अनुसार पीपलवृक्ष एक घंटे में १७१३ लीटर प्राणवायु का उत्सर्जन करता है और २२५२ लीटर कार्बनडाइऑक्साइड का प्रभक्षण कर अपना भोजन बनाता है। कृषिकार्य तथा भूजल-भण्डारों को समृद्धता प्रदान करते रहने में 'भूसतही मृदा' की उपस्थिति एक अन्य अनिवार्यता है जिसे केवल वनस्पतियों ही संरक्षण प्रदान कर सकती है।

शास्त्रों में व्यर्थ में वृक्षों को काटने पर दण्ड का विधान दर्शाकर पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने में वृक्षों की अनिवार्यता का बोध कराया गया है। इस प्रकार के नियम विश्व के कई देशों में अब बनाये जा रहे हैं।

भारत में विद्यमान जैव-समृद्धता में प्राकृतिक रूप से समाये विशिष्ट प्रजनन तथा औपचारिक गुणों का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए हमारे विद्वान पूर्वजों ने 'आयुर्वेद विज्ञान' की उद्भावना की थी। इस उपचार विधि में औषध-निर्माणके लिये विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों तथा गोधन-पंचगव्य का उपयोग किया जाता है। जैविक औषध होने के कारण

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

इन्हें खाने से कोई नुकसान नहीं होता है और इनके उपयोग से रोगियों में किसी प्रकार का उत्तर प्रभाव (साईड इफेक्ट) भी नहीं उभरता।

भारतीय भू-वैज्ञानीय तथा जलवायु-परिवेश के अन्तर्गत भौतिक रूप में तालाब-निर्माण को हमारे पूर्वजों द्वारा प्रोत्साहन देना पारिस्थिति की विधान के उच्चस्तरीय ज्ञान से उभरा नियम है। प्रकृति ने नदी-नालों का निर्माण भी स्थानीय स्थलाकृतिक परिवेश में वर्षा तथा पानी-संचय की क्षमता के अनुरूप ही किया है। इसलिये जंगलों को काट देने पर वहाँ प्राकृतिक सन्तुलन अस्त-व्यस्त हो जाता है और कृषि-उत्पादन भी घटता जाता है।

आज विश्वभर में जलभण्डारों को समृद्धता प्रदान करने के लिये 'जल सम्भर-प्रबन्धकौशल' कार्य के दौरान उल्लिखित सभी प्राचीन भारतीय नियम अपनाये जा रहे हैं। मानव गतिविधियों के फलस्वरूप विश्व में चारों ओर पारिस्थितिकीय असन्तुलन से पर्यावरण में प्रदूषण-स्तरवृद्धि और प्रकृति द्वारा स्थापित खाद्यश्रृंखला ध्वस्त होने का सिलसिला चल पड़ा है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि प्राचीन भारतीय ग्रन्थ पर्यावरण-संरक्षण-संविधान के सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुतकर्ता हैं।

:: पादटीप ::

१. यजुर्वेद – ३६.१७
२. विष्णुधर्मसूत्र – १९.४
३. भविष्यपुराण – उत्सर्गमयूरव
४. अथर्ववेद – ३.७.५
५. याज्ञवल्क्यस्मृति – १.१३७
६. यमस्मृति – ६८
७. मत्स्यपुराण – ५९.१६